बारिश में मशरूम

व्लादिमीर सुतीव के रूसी कहानी पर आधारित

मिर्रा गिन्सबर्ग

चित्र: जोस अरुएगो, एरियन डेवी

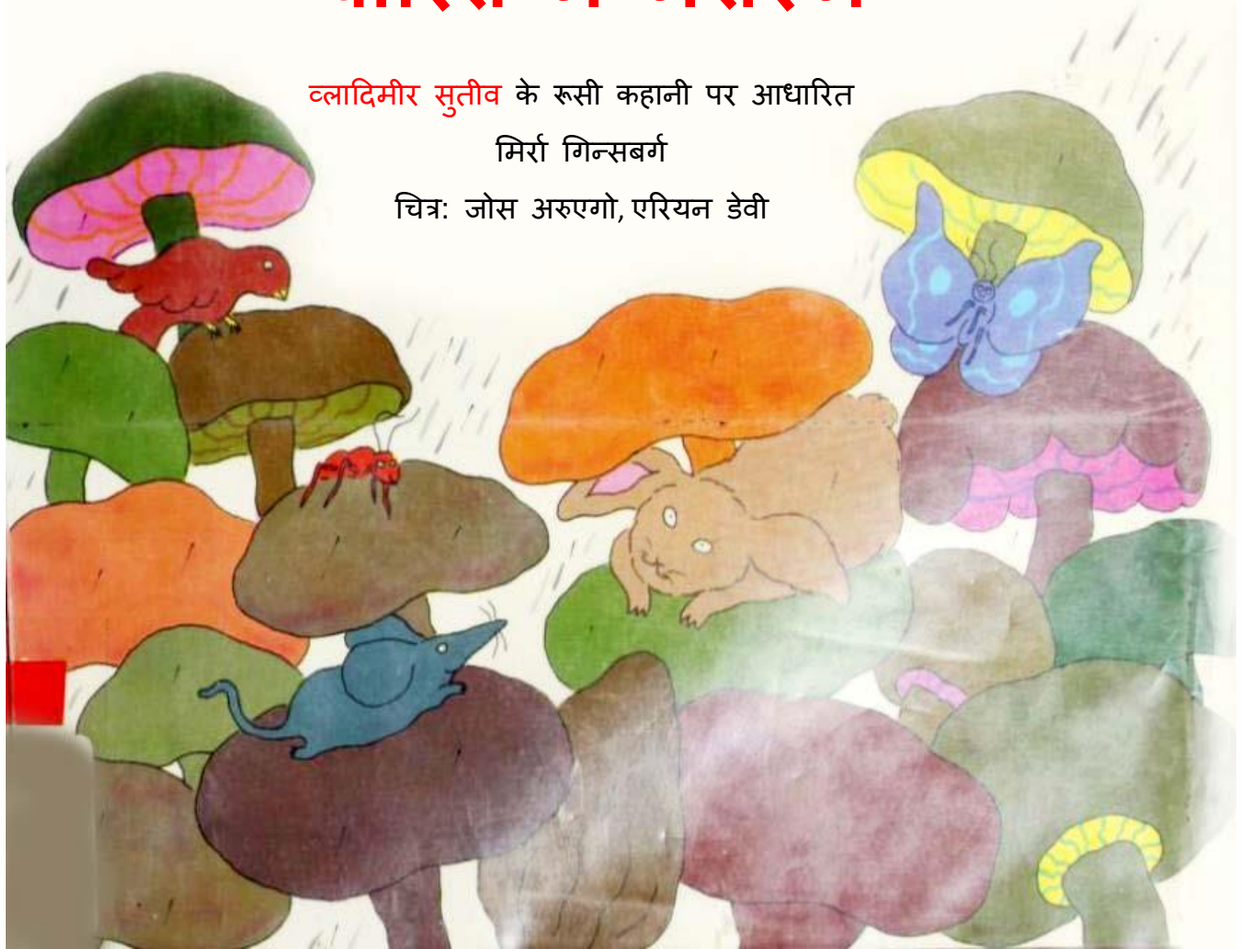

जब बारिश शुरू होती है, तो एक चींटी छिपने के लिए एक छोटे मशरूम के नीचे रेंगती है. बारिश और तेज़ होती जाती है, फिर चींटी, तितली के लिए जगह बनाने के लिए थोड़ा खिसक जाती है. फिर, एक-एक करके, एक चूहा, एक गौरैया और एक खरगोश भी मशरूम के नीचे आकर पनाह लेते हैं. लेकिन वे सभी वहां पर कैसे फिट होंगे?

1974 में पहली बार प्रकाशित हुई यह बहुचर्चित चित्र पुस्तक, “बारिश में मशरूम” के साथ क्या होता है, इस पर हल्के-फुल्के अंदाज में नजर डालती है.

बारिश में मशरूम

व्लादिमीर सुतीव के रूसी कहानी पर आधारित

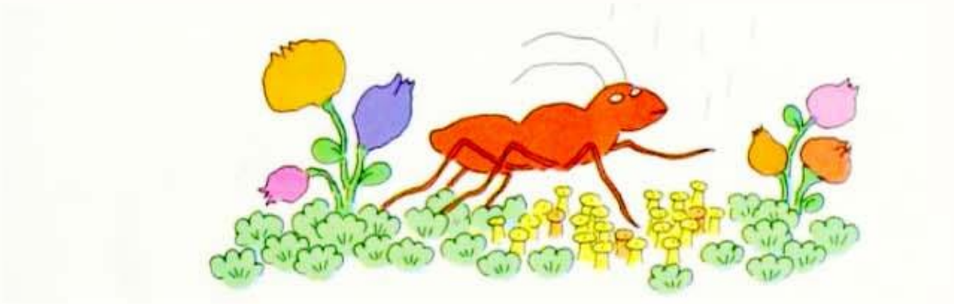

मिर्रा गिन्सबर्ग

चित्र: जोस अरुएगो, एरियन डेवी

एक दिन एक चींटी बारिश में फंस गई.

"मैं कहां छिप सकती हूं?" उसने आश्चर्य किया.

तभी उसने एक छोटे, छतरी जैसे मशरूम को, ज़मीन पर खड़े हुए देखा. चींटी तुरंत उसके नीचे जाकर छिप गई. वो वहीं बैठ गई और बारिश रुकने का इंतजार करने लगी. लेकिन बारिश और तेज़ होती गई.

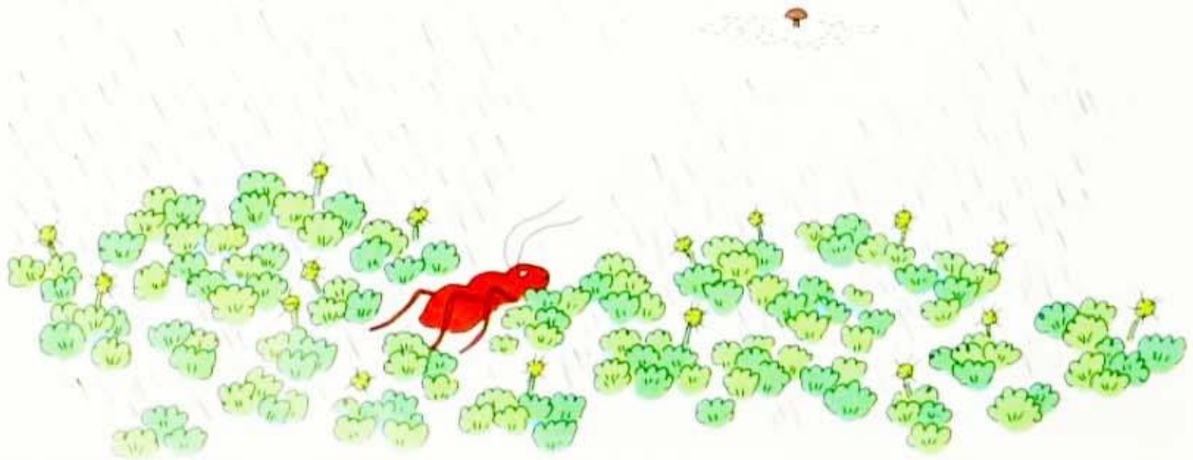

कुछ देर में एक गीली तितली भी मशरूम के पास पहुंची.

"चचेरी बहन चींटी, मुझे बारिश में अंदर आने दो. मेरे पंख इतने गीले हैं कि मैं उड़ नहीं सकती हूं."

"मैं तुम्हें अंदर कैसे आने दे सकती हूं?" चींटी ने कहा.

"अंदर बमुश्किल से सिर्फ मेरे लिए ही जगह है."

"उससे कोई फर्क नहीं पड़ता है." तितली ने कहा,

"गीले होने से तो भीड़भाड़ बेहतर है."

फिर चींटी कुछ खिसकी और उसने तितली के लिए जगह बनाई.

बारिश और तेज़ हो गई.

फिर एक चूहा भागा हुआ आया.

"मुझे मशरूम के नीचे आने दो. मेरी हड्डियां तक भीग गई हैं."

"हम तुम्हें अंदर कैसे आने दे सकते हैं? देखो, अंदर कोई जगह नहीं है."

"बस थोड़ा सा और खिसक जाओ!"

फिर वे थोड़ा और खिसके और उन्होंने चूहे के लिए जगह बनाई.

बारिश तेज़ होती गई और उसने रुकने का कोई नाम ही नहीं लिया.

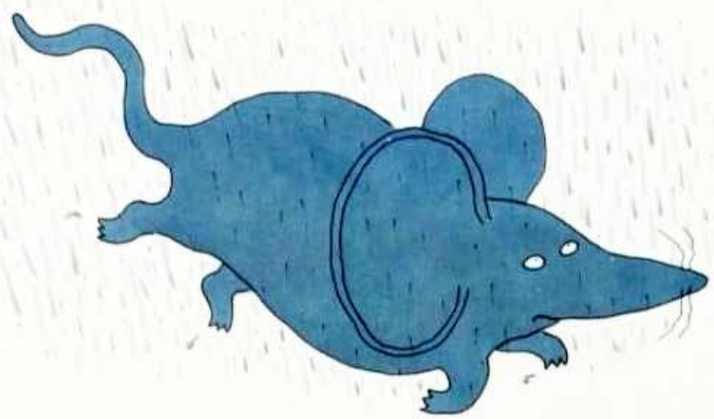

एक नन्हीं गौरैया मशरूम के पास आई और रोने लगी:

"मेरे पंख गीले हो गए हैं, मेरे पंख बहुत थक गए हैं!

कृपा मुझे मशरूम के नीचे सूखने और बारिश रुकने तक आराम करने दो!"

"लेकिन अंदर बिल्कुल भी जगह नहीं है."

"कृपया! थोड़ा खिसक जाओ!"

वे थोड़ा खिसके और फिर गौरैया भी अंदर आ गई.

तभी एक खरगोश कूदा और मशरूम को देखा.

"ओह, मुझे छिपाओ!" वो चिल्लाया. "मुझे बचाओ!
देखो, एक लोमड़ी मेरा पीछा कर रही है!"

"बेचारा खरगोश," चींटी ने कहा.

"चलो अंदर वैसे भी काफी भीड़ है इसलिए तुम भी अंदर आ जाओ."

जैसे ही उन्होंने खरगोश को छुपाया, लोमड़ी दौड़ती हुई आई.

"क्या तुमने खरगोश को देखा? वो किस ओर गया है?" लोमड़ी ने पूछा.

"हमने उसे नहीं देखा."

लोमड़ी पास आई और सूंघने लगी.

"मुझे खरगोश की गंध आ रही है. क्या वो अंदर तो नहीं छिपा है?"

"अरे मूर्ख लोमड़ी! भला खरगोश यहां अंदर कैसे आ सकता है?
क्या तुम्हें दिखाई नहीं देता कि अंदर कोई जगह ही नहीं है?"

फिर लोमड़ी ने अपनी नाक ऊपर उठाई, अपनी पूंछ हिलाई और वो भाग गई.

तब तक बारिश ख़त्म हो चुकी थी.

सूरज बादलों के पीछे से बाहर निकल आया था.

फिर सभी जीव मशरूम के नीचे से बाहर आए.

मशरूम, धूप में चमक रहा था और काफी खुश था.

चींटी ने अपने पड़ोसियों की ओर देखा.

"यह कैसे संभव हो सकता है? पहले तो मशरूम के नीचे केवल मेरे लिए ही पर्याप्त जगह थी, पर अंत में हम सभी पांच जीव उसके नीचे बैठ पाए."

"क्वा-हा-हा! क्वा-हा-हा!" उनके पीछे कोई जोर से हंसा.

जब उन्होंने मुड़कर देखा तो एक मोटा हरा मेंढक मशरूम के ऊपर बैठा हुआ था और उनकी ओर ज़ोर-ज़ोर से अपना सिर हिला रहा था.

"क्वा-हा-हा!" मेंढक ने कहा. "क्या आप नहीं जानते कि बारिश में मशरूम को क्या होता है?"

फिर वो मेंढक हंसते हुए दूर चला गया.

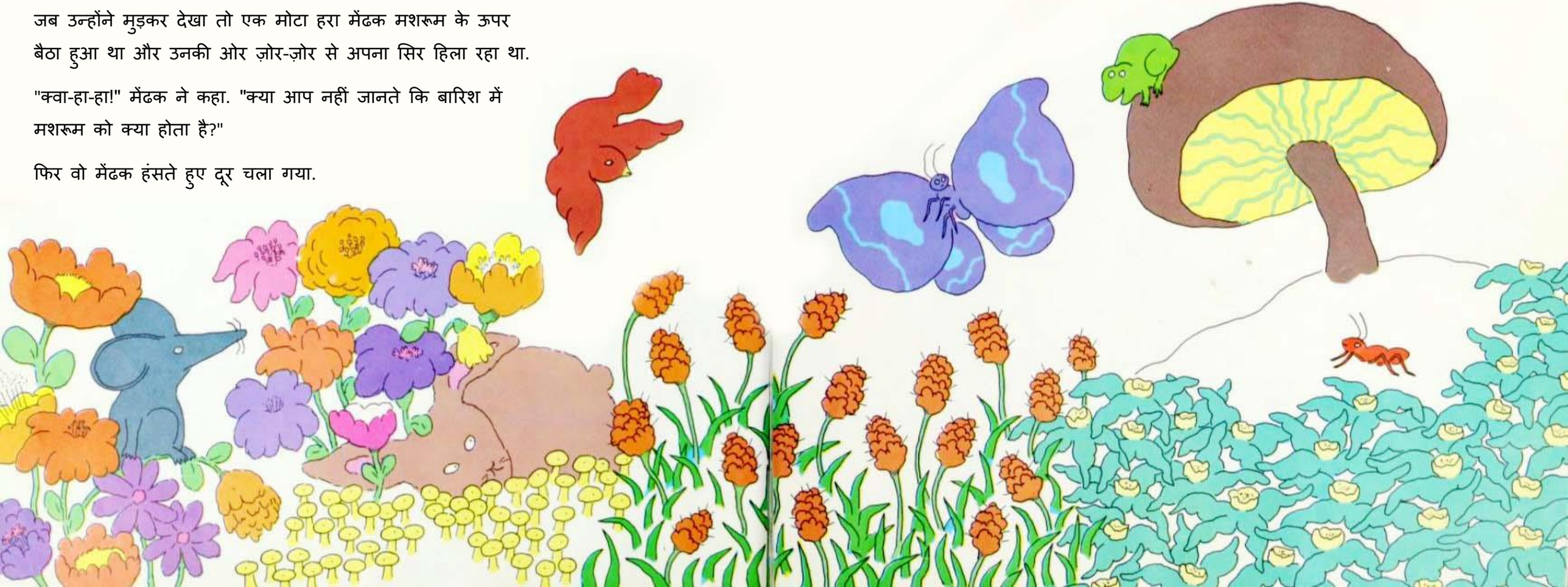

चींटी, तितली, चूहा, गौरैया और खरगोश ने पहले एक-दूसरे को देखा, फिर मशरूम को.

फिर अचानक उन्हें समझ में आया कि मशरूम के नीचे उन सभी के लिए पर्याप्त जगह कैसे बनी थी.

क्या आपको पता है?

कल्पना करें, कि जब बारिश होती है तो मशरूम को क्या होता है?

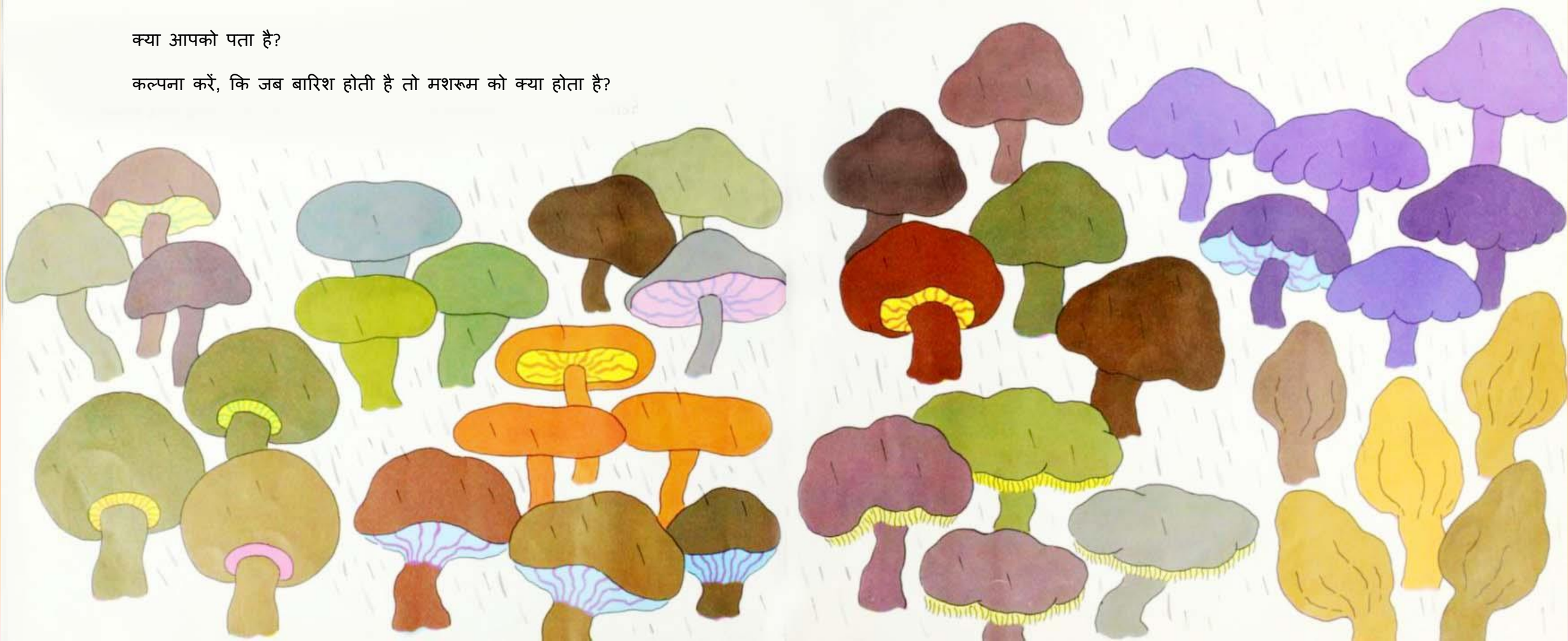

मशरूम भी बढ़ता है!

अंत